17 / 03 / 82 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

संगम युग के विशेष वरदान

'अमर भव' की प्राप्ति का अनुभव

➢➢ उठाकर धरा से जो धूली कण को मस्तक से अपने ऐसे लगाया

➳ _ ➳ मैं भृकुटी के मध्य विराजमान आत्मा हूं

→ अपने भाग्य पर इतरा रही हूं

➳ _ ➳ मैं कल्प कल्प की अधिकारी आत्मा

➳ _ ➳ श्रेष्ठ भाग्य की अधिकारी आत्मा

→ भगवान की नजर मुझ पर पड़ी है

→ मैं साधारण आत्मा

■ पर सच्ची सच्ची ब्राह्मण हूं मैं

→ दुनिया की नजर में मैं अति साधारण आत्मा

■ बाबा की नजरों में उनकी नैनो का नूर हूं मैं

→ दुनिया के हिसाब से अनपढ़ हूँ

■ बाबा के लिए नॉलेज फुल हूं मैं

→ इस शरीर से कभी उठना बैठना भी मुश्किल

■ पर एक सेकंड में परमधाम तक पहुंच जाती हूं मैं

→ मैं चतुर सुजान आत्मा

■ भगवान को ही अपना बना लिया है मैंने

➢➢ चमकने लगे हम सितारों से बनकर अपने गुणों से है इतना सजाया

➳ _ ➳ मैं अस्त्रधारी आत्मा हूं

→ बाबा की शक्तियां मेरे अस्त्र हैं

■ मैं शिव शक्ति हूं

→ ऑलमाइटी की सेना की पांडव हूं मैं

■ मैं पांडव सेनानी हूं

→ तीनों लोकों में अपना झंडा लहरा दिया है मैंने

■ बाबा की सेना में महावीर हूं

→ मैं विश्व के आगे साधारण से सर्वश्रेष्ठ बन गई हूं

➢➢ बलिहार होकर तेरे हार में हम हीरो के जैसे संजोए हुए हैं

➳ _ ➳ पूरे कल्प में श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ युग है संगम युग

→ मैं श्रेष्ठ संगम युग की

■ श्रेष्ठ आत्मा हूं

→ इस वरदानी युग की

■ वरदानी मूर्त आत्मा हूँ

→ श्रेष्ठ वरदान की अधिकारी हूं मैं

→ कल्प कल्प की महिमा की अधिकारी आत्मा हूं

→ अविनाशी बाप के मुख से

→ सत्य बाप के मुख से

■ मुझ आत्मा की महिमा हो रही है

■ मैं आत्मा इस नशे से भरपूर हूं

- यह नशा अविनाशी नशा है

→ वरदाता बाप ने

→ विधाता बाप ने

→ भाग्य दाता बाप ने

- कितना सम्मान किया है
- कितने टाइटल्स दिए हैं

→ अमर बाप ने मुझे

- अमर भव का वरदान दिया है

→ मैं बाबा के वरदान को पूरी तरह

- अपने जीवन में समा रही हूं

→ मैं आत्मा अमरनाथ बाप की बच्ची हूं

→ बाबा द्वारा प्रदान वरदानों की वाइब्रेशन

- निरंतर अनुभव करती हूं

→ मैं आत्मा अमरत्व का अनुभव कर रही हूं

→ मैं ही हूं अमर भव के वर्से की

- अधिकारी आत्मा

→ मैं संगम युग में ही अमर हो गई हूं